भारत सरकार

कोयला मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 215

जिसका उत्तर 02 फरवरी, 2022 को दिया जाना है

कोयला उत्पादन

215. श्री सुनील कुमार सोनी:

श्री विजय बघेल:

श्री अरूण साव:

क्या **कोयला** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) दुनिया में कोयला उत्पादन के मामले में भारत की स्थिति क्या है;

(ख) पिछले पांच वर्षों के दौरान कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) द्वारा किए गए कोयला उत्पादन की मात्रा कितनी है और इसके अपटेक का ब्यौरा क्या है;

(ग) पिछले पांच वर्षों के दौरान साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एसईसीएल) द्वारा कोयले के उत्पादन की मात्रा कितनी है;

(घ) क्या एसईसीएल की विभिन्न खदानें अपनी पूरी क्षमता से काम कर रही हैं; और

(ड.) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं और सरकार द्वारा उत्पादन बढ़ाने के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं?

उत्तर

संसदीय कार्य, कोयला एवं खान मंत्री

(श्री प्रल्हाद जोशी)

(क): वर्ष 2020 में विश्व में कोयला उत्पादन की दृष्टि से भारत का दूसरा स्थान था।

(ख): पिछले पांच वर्षों के दौरान कोल इंडिया लिमिटेड का कुल कच्चा कोयला उत्पादन और ऑफटेक निम्नानुसार है:

(आंकड़े मिलियन टन में)

वर्ष	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21
उत्पादन	554.14	567.37	606.89	602.14	596.22
ऑफटेक	543.22	580.29	608.14	581.92	574.48

(ग): पिछले पांच वर्षों के दौरान साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एसईसीएल) के कोयला उत्पादन का विवरण निम्नानुसार है:

(आंकड़े मिलियन टन में)

वर्ष	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21
उत्पादन	140.003	144.709	157.349	150.546	150.605

(घ) और **(ङ.):** एसईसीएल में, 69 खानें (46 भूमिगत + 23 ओपनकास्ट) हैं। वित्त वर्ष 2020-21 के लिए इन खानों की कुल आंकलित क्षमता 179.98 मि.ट. है, जिसकी तुलना में 150.605 मि.ट. उत्पादन हुआ है, जो आंकलित क्षमता का लगभग 84% है। खानों को पूरी क्षमता से प्रचालित करने के लिए सभी प्रयास किए जाते हैं। 23 ओपनकास्ट खानों में से 8 खानें अर्थात गेवरा, कुसमुंडा, छल, अंबिका, बतूरा, जगन्नाथपुर, सरायपाली और अमादंड निर्माण/विकास के विभिन्न चरणों में हैं जैसे भूमि का कब्जा और वन अनापत्ति। दो परियोजनाएं अर्थात अमेरा और आमगांव ग्रामीणों के विरोध के कारण फिलहाल ठप पड़ी हैं।

क्षमता उपयोग में सुधार के लिए निम्नलिखित कार्रवाई की गई है:

1. भूमि का कब्जा प्राप्त करने के लिए राज्य सरकार के अधिकारियों और परियोजना प्रभावित परिवारों (पीएएफ) के साथ गहन संपर्क, नियमित बैठक और समन्वय।
2. उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए हेवी अर्थ मूविंग मशीनरी (एचईएमएम) का निवारक/समयबद्ध रख-रखाव।
3. कार्यबल की प्रेरणा के लिए उत्पादन प्रोत्साहन योजना।
4. एचईएमएम के इष्टतम उपयोग के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।

कुछ भूमिगत खानों में भण्डार की समाप्ति, प्रतिकूल भू-खनन दशाएं जैसे पतली कोयला सीमों का मिलना, फॉल्ट्स की मौजूदगी, जलभराव वाली परतें और कार्यबल द्वारा लंबी और कठिन दूरी तय करना तथा डी-पिलरिंग में आने वाली कठिनाइयों के कारण क्षमता का कम उपयोग हो रहा है। ऐसी खानों के नाम इस प्रकार हैं:

कपिलधारा, बिजुरी, कुमदा न्यू, बलरामपुर, जमुना 9 और 10, नवापारा, गायत्री, एनसीपीएच न्यू, राजनगर आरओ, भादरा, मीरा, बरतराई, पिपरिया, राजगमर, सुरकचर 3 और 4, सुरकचर मेन, बागदेवा, ढेलवाडीह, सिंघली, राजेंद्र आदि।

बेहराबंद, कुर्जा-शीतलधारा आदि जैसी भूमिगत खानों में कंटीन्यूअस माइनर प्रौद्योगिकियों के इस्तेमाल के लिए कार्रवाई की गई है और कार्यबल को कठिन यात्रा से बचाने के लिए मैन-राइडिंग सिस्टम भी स्थापित किया गया है।

****